श्रीकांत वर्मा

श्रीकांत वर्मा (18 सितंबर 1931 - 25 मई 1986) एक भारतीय कवि और 1976 से 1982 और 1982 से 1986 तक कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में मध्य प्रदेश से संसद सदस्य थे । वर्मा की 1986 में न्यूयॉर्क में कैंसर से मृत्यु हो गई।

वर्मा की शादी वीना वर्मा से हुई थी जो मध्य प्रदेश से सांसद भी थीं। वर्मा के बेटे अभिषेक वर्मा एक भारतीय हथियार डीलर हैं और उन्हें 1997 में भारत का सबसे कम उम्र का अरबपति घोषित किया गया था।

वर्मा का जन्म भारतीय राज्य मध्य प्रदेश के बिलासपुर शहर में हुआ था। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से हिंदी में मास्टर ऑफ़ आर्ट्स की डिग्री हासिल की । उन्होंने बीस किताबें लिखी हैं।

वर्मा को 1976 में मध्य प्रदेश सरकार की ओर से *जलसागर* के लिए तुलसी सम्मान और 1981 में मध्य प्रदेश राज्य कला परिषद की ओर से *शिक्षा सम्मान से* सम्मानित किया गया। 1982 में, उन्होंने नई दिल्ली में आयोजित *एफ्रो-एशियाई लेखक सम्मेलन की अध्यक्षता की। 1987 में, उन्हें मगध* के लिए मरणोपरांत साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

श्रीकांत वर्मा की रचनाएँ –

श्रीकांत वर्मा ने आधुनिक हिंदी साहित्य की कई विधाओं में अनुपम कृतियों का सृजन किया हैं। यहाँ श्रीकांत वर्मा का जीवन परिचय (Shrikant Verma Ka Jivan Parichay) के साथ ही उनकी संपूर्ण रचनाओं के बारे में विस्तार से बताया गया है, जो कि इस प्रकार हैं:

कविता-संग्रह

- भटका मेघ
- माया दर्पण
- दिनारंभ
- जलसाघर
- मगध
- गरुड़ किसने देखा है
- प्रतिनिधि कविताएँ

कहानी-संग्रह

- झाड़

- संवाद

उपन्यास

- दूसरी बार

आलोचना

- जिरह

अनुवाद

- फ़ैसले का दिन – आन्द्रेई वोज्नेसेंस्की की कविताएँ

साक्षात्कार और वार्तालाप

- बीसवीं शताब्दी के अँधेरे में

पुरस्कार एवं सम्मान

श्रीकांत वर्मा (Shrikant Verma Ka Jivan Parichay) को आधुनिक हिंदी साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान देने के लिए सरकारी और ग़ैर सरकारी संस्थाओं द्वारा कई पुरस्कारों व सम्मान से पुरस्कृत किया जा चुका है, जो कि इस प्रकार हैं:

- 'जलसाघर' के लिए 'तुलसी सम्मान
- मध्य प्रदेश शासन का प्रथम 'शिखर सम्मान
- यूनाइटेड नेशंस इंडियन काउंसिल ऑफ़ यूथ अवार्ड
- नंददुलारे वाजपेयी पुरस्कार
- तुलसी पुरस्कार
- इंदिरा प्रियदर्शिनी सम्मान
- कुमार आशान पुरस्कार
- साहित्य अकादमी पुरस्कार

न्यूयॉर्क में हुआ निधन

श्रीकांत वर्मा ने कई विधाओं में अपनी लेखनी चलाकर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। किंतु कैंसर की बीमारी के कारण उनका अमेरिका के न्यूयॉर्क में स्थित स्लोन केटरिंग मेमोरियल अस्पताल में 54 वर्ष की आयु में 25 मई,

1986 को निधन हो गया। लेकिन आज भी वे अपनी लोकप्रिय रचनाओं के लिए हिंदी साहित्य जगत में जाने जाते हैं